International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(3): 196-198

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(3): 196-198
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 11-03-2017
Accepted: 12-04-2017

अभिनव तिवारी
शोधच्छात्र, ज्योतिर्विज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

Correspondence
अभिनव तिवारी
शोधच्छात्र, ज्योतिर्विज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

ज्योतिषीय परिप्रेक्ष्य में आजीविका विचार

अभिनव तिवारी

सारांश
सामान्य जन मानस में से प्रत्येक व्यक्ति की यह एक अनिवार्य जिज्ञासा होती है कि वह अपनी आजीविका हेतु किस कार्य का चयन करे जिससे कि सुगमतापूर्वक अर्थोपार्जन हो सके।
प्रस्तुत शोध पत्र में इसी विषय की ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से विवेचना की गयी है। ज्योतिष ग्रन्थों के अनुसार जन्मांग के दशम भाव से आजीविका का विचार किया जाता है तथा इस भाव एवं दशमेश की नवांश राशि के स्वामी ग्रह की आजीविका निर्धारण में महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

कूट शब्द: आजीविका, दशम भाव, दशमेश, नवांश, राशि

प्रस्तावना
प्रत्येक मनुष्य जन्म के साथ अपने पूर्व संचित कर्मों का एक संग्रह साथ लाता है, जिसके अनुसार उसके जीवन की दिशा, आजीविका आदि का निर्धारण होता है। किसी भी व्यक्ति के जन्मांग का अध्ययन कर इस विषय में स्पष्ट रूप से प्रकाश डाला जा सकता है।
जन्मांग चक्र में दशम भाव को कर्म भाव की संज्ञा दी जाती है।[1] इसके स्वामी को दशमेश या कर्मेश कहा जाता है।[2] दशम भाव से ही व्यक्ति की आजीविका का विचार किया जाता है।[3]
ज्योतिष के अनुसार लग्न, चन्द्रमा में से जो बली हो, उससे दसवें स्थान में जो ग्रह हो, उसके अनुसार सूर्यादि क्रम से धनलाभदायक स्थितियों का विचार किया जाता है। जैसे कि दशम में सूर्य हो तो पिता से, चन्द्रमा हो तो माता से, मंगल हो तो स्वाभाविक शत्रु, चाचा, ताऊ आदि के पक्ष से, बुध हो तो हितजन, मामा या मित्रों आदि से, गुरु हो तो भाई से, शुक्र हो तो पत्नी से, शनि हो तो नौकरों तथा कर्मचारियों से धन प्राप्त होता है या ये लोग रोजगार में सहायक होते हैं। यथा–

> अर्थाप्तिरंगविधुतो दशमेऽर्कमुख्यै स्तातास्बिकारिहितबन्धुकलत्रभृत्यैः।
> तैर्वाधलाद्यधनगै स्वसुहृद् रिपुभ्यः स्वेष्टारिगैर्बहुविधा बलिभिः शुभैस्तैः।।[4]

वराहमिहिर का भी कथन है–

> अर्थाप्तिः पितृजननी सपत्नमित्र–भ्रातृस्त्रीभृतकजनाद् दिवाकराद्यैः।
> होरेन्द्वोर्दशमगतैर्विकल्पनीया भेन्द्वर्कास्पदपतिगांशनाथवृत्या।।[5]

इस विषय में यह ध्यान देने योग्य है कि प्राचीन भारत में आय के स्रोत अत्यन्त सीमित थे किन्तु आधुनिक समय में कल–कारखाने, मशीनरी, आयात–निर्यात आदि अनेक साधन हो गये हैं। इस कारण सूर्य से मात्र पिता का ही नहीं अपितु सूर्य द्वारा निर्दिष्ट सभी कारकत्वों से सम्बन्धित साधनों में से एक या अधिक से द्रव्य प्राप्ति हो सकती है। इसी प्रकार चन्द्रमा आदि ग्रहों से भी विचार किया जाना चाहिए। उदाहरणस्वरूप यदि लग्न से दशम में बलवान् चन्द्रमा हो तो सफेद वस्तुओं से, जल से उत्पन्न पदार्थों से, चाँदी से, मोती से, समुद्र पार देशों से, व्यापार से, जनता के उपयोग में आने वाले पदार्थों से धन लाभ की सम्भावना रहती है अथवा ये तत्त्व आजीविका में किसी न किसी रूप में सहयोगी होते हैं।
एक अन्य महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त यह है कि लग्न, चन्द्रमा तथा सूर्य में से जो सर्वबली हो उससे दशमेश, जिस ग्रह के नवांश में हो या जिस राशि के नवांश में हो तो उसी ग्रह, राशि के गुण, स्वभावानुसार आजीविका निर्धारित होती है–

भृत्याद्वा दिननाथलग्नशशिनां मध्ये बलीयांस्ततः।
कर्मेशस्थनवांशराशिपवशाद्वृत्तिं जगुस्तद्विदः।।[6]

यदि दशमेश सूर्य के नवांश (सिंह राशि के नवांश) में हो तो फल, फूल, वृक्ष, मन्त्र, जप, शठता (धोखेबाजी, चालाकी), जुआ, झूठ बोलना, कम्बल, दवा, चिकित्सा, धातु क्रिया (धातुओं से सम्बद्ध व्यवसाय), राजा (वर्तमान समय में समृद्ध व सम्मानित व्यक्ति) से सम्मान या नौकरी, वजीफा आदि से जीविका होती है–

फलद्रुमैर्मन्त्रजपैश्च शाठ्यादद्यूतानृतैः कम्बलभेषजाद्यैः।
धातुक्रियाद् वा क्षितिपालपूज्याज्जीवत्यसौ पंकजवल्लभांशो।।[7]

यदि दशमेश चन्द्रमा के नवांश (कर्क राशि के नवांश) में हो, तो जल से उत्पन्न होने वाली वस्तुएँ जैसे शंख, सिंघाड़ा, सब्जी आदि के व्यापार या जल से बने पेय पदार्थ, शरबत, सोडा, मिनरल वाटर, लस्सी, जूस, रस आदि से, खेती, मिट्टी के खिलौने, मिट्टी के बर्तन, सूती वस्त्रों के क्रय–विक्रय, तीर्थाटन व किसी स्त्री के आश्रय से धनलाभ व जीविका होती है–

जलोद्भवानां क्रयविक्रयेण कृषिक्रियागोमहिषीसमुत्थैः।
तीर्थाटनाद्वा वनिताश्रयाद्वा निशाकरांशे वसनक्रयाद्वा।।[8]

दशमेश यदि मंगल के नवांश (मेष या वृश्चिक राशि के नवांश) में हो तो धातु– लोहा, ताँबा, पीतल, सोना, स्टील आदि के कार्य से, लड़ाई–झगड़ा, युद्ध, डाकाजनी, फौज की नौकरी, अग्निकर्म (हलवाई, होटल, रेस्टोरेन्ट आदि के कार्य) से, दूसरे को कष्ट या पीड़ा देकर, शस्त्र या हथियार द्वारा, साहस के कार्यों से, म्लेच्छों के आश्रय से, खुफिया विभाग में काम करने से, पुलिस का कार्य या मुखबिर की हैसियत से अथवा चोरी बेईमानी के कार्य से जीविका होती है–

भौमांशके धातुरणप्रहारैर्महानसाद्भूमिवशात्सुवर्णात्।
परोपतापायुधसाहसैर्वा म्लेच्छाश्रयात्सूचकचोरवृत्या।।[9]

यदि दशमेश बुध के नवांश (मिथुन या कन्या राशि के नवांश) में हो तो काव्यागम (काव्य रचना, काब्य पढ़ना, कवित्व, काव्यशास्त्र आदि) लेखन वृत्ति से, ज्योतिष, पाण्डित्य, दूसरे के नैमित्तिक वेदादि ग्रन्थ के पाठ से, पुरोहिती के कार्य या मिथ्यावाचन से जीविकोपार्जन होता है–

काव्यागमैर्लेखकलिप्युपायैज्योतिर्गणज्ञानवशाद्बुधांशे।
परार्थवेदाध्ययनाज्जपाच्च पुरोहितव्याजवशाद्वृत्तिः।।[10]

दशमेश यदि गुरु के नवांश (धनु या मीन राशि के नवांश) में हो तो ब्राह्मणों व देवताओं के आश्रय से, अध्यापक वृत्ति से, पुराण धर्म ग्रंथ, नीति मार्ग, उपासना, धर्मोपदेश से जीविका का ज्ञान होता है–

जीवांशके भूसुरदेवतानां समाश्रयाद्भूमिपतिप्रसादात्।
पुराणशास्त्रागमनीतिमार्गाद् धर्मोपदेशेन कुसीदवृत्या।।[11]

यदि नवांशेश शुक्र हो (अर्थात् वृष या तुला राशि का नवांश हो) तो स्त्री संश्रय (स्त्रियों से सम्बद्ध कार्य, श्रंगार, सैलून, स्त्रियों के वस्त्र, वेश्यावृत्ति, कालगर्ल, अभिनेत्री तैयार करना या स्वयं अभिनय करना), गाय, भैंस आदि दुधारू पशुओं पर आधारित कार्य, पशु व्यवसाय, नृत्य–संगीत या वाद्य से सम्बन्धित कार्य, चाँदी, खुशबूदार पदार्थ, दूध से बने पदार्थ (मिठाई, खोया, पनीर, आदि), गहने या साज–सज्जा, उत्तम वस्त्रों के व्यवसाय, मन्त्री पद, सलाहकारी या कवित्व से जीविका होती है–

स्त्रीसंश्रयाद्गोमहिषीगजाश्वैस्तौर्यत्रिकैर्वा रजतैश्चगन्धैः।
क्षीराद्यलंकारपटीपटाद्यैः शुक्रांशकेऽमात्यगुणैः कवित्वात्।।[12]

दशमेश यदि शनि के नवांश (मकर या कुम्भ राशि के नवांश) में हो तो मूल फल (भूमि के नीचे पैदा होने वाले फल जैसे कि जमीकन्द, कन्दमूल आदि), शारीरिक परिश्रम, नौकरी द्वारा (स्वयं दूसरों की नौकरी करके या दूसरों को नौकरी देकर) दुष्टों या नीचजनों के धन से, मोटे अनाज से, बोझा ढोकर या भारोत्तोलन द्वारा, नीचमार्ग से धनलाभ के व्यवसाय, दस्तकारी या लकड़ी के कार्यों (लकड़ी के क्रय–विक्रय, फर्नीचर आदि का निर्माण) अथवा वधादि कर्मों (मारना, पीटना, काटना, कसाई कर्म आदि) से जीविका होती है–

शन्यंशके मूलफलैः श्रमेण प्रेष्यैः खलैर्नीचधनैः कुधान्यैः।
भारोद्वहात्कुत्सितमार्गवृत्त्या शिल्पादिभिर्दारुमयैर्वधाद्यैः।।[13]

बृहज्जातकम् में भी दशमेश के नवांशेश से अजीविका विचार सम्बन्धी इन नियमों को स्वीकार किया गया है–

अर्काशेतृणकनकोर्णभेषजाद्यैश्चन्द्रांशेकृषिजलजाङ्गनाश्रयाच्च।
धात्वग्निप्रहरणसाहसैः कुजांशे सौम्यांशे लिपिगणितादि काव्यशिल्पैः।।
जीवांशे द्विजविबुधागमादिधर्मैः शुक्रांशे मणिरजतादिगोमहिष्यैः।
सौरांशे श्रमवधभारनीचशिल्पैः कर्मेशाध्युषितसमानकर्मसिद्धिः।।[14]

इसी सन्दर्भ में यह भी वर्णन प्राप्त होता है कि नवांश का स्वामी यदि बलवान् हो अर्थात् अपने उच्च, स्वक्षेत्र, उच्च नवांश या स्वनवांश में हो तो अल्प परिश्रम में, अधिक लाभ के साथ जीविका सुगमता से चलती है।[15] इसके विपरीत यदि नवांशेश दुर्बल हो अर्थात् नीच, शत्रुक्षेत्री हो तो जीविका में परिश्रम मजदूरी जैसा और लाभ स्वल्प होता है।[16]

दशम भाव में स्थित राशि तथा दशमेश की नवांश राशि से भी इस विषय में महत्त्वपूर्ण संकेत प्राप्त होते हैं। इन राशियों से निर्दिष्ट देश एवं दिशा से व्यक्ति को धन तथा जीविका प्राप्ति की सम्भावना रहती है।

दशम भाव में जांगल (वनचर), अनूप (जलचर), ग्राम्य या अरण्यक, क्रूर, सौम्य, पाप, द्विपद, चतुष्पद, सरीसृप इत्यादि जिस रूप की राशि हो उसके अनुरूप जातक का कार्य होगा तथा उसी से संकेतित प्रदेश से मनुष्य की जीविका का सम्बन्ध होता है। सारावली में इसे व्यक्त करते हुए आया है कि–

जाङ्गलमथवानूपं तथोभयं वा गृहं परीक्षेत।
ग्राम्यमथारण्यं वा सौम्यर्क्षं पापभवनं वा।।
द्विपदचतुष्पदरूपं सरीसृपं वा तथोभयं चैव।
यद्रूपं तद्भवनं यादृशकं यत्स्वभावं च।।
प्रवदेत् तत्समदेशे कर्मप्राप्तिं नरस्य तत्सदृशीम्।
तस्माद्दशमं भवनं प्रसवे बुध्येत यत्नेन।।[17]

फलदीपिका के अनुसार जीविका के देश एवं दिशा का निर्धारण करने में दशम भाव में स्थित राशि के समान दशमेश की नवांश राशि से भी विचार किया जाना चाहिए। इस राशि के अनुरूप भी जातक का कार्य तथा कर्मक्षेत्र हो सकता है। यदि दशम भावगत राशि या नवांश राशि अपने स्वामी से युत या दृष्ट हो तो मनुष्य स्वदेश मे रहकर धनोपार्जन करेगा किन्तु यदि ये राशियाँ अन्य ग्रहों से युक्त या दृष्ट हों तो जीविका परदेश में होगी। नवांशेश स्थिर राशि में हो तो स्वदेश में जीविका देगा–

अंशेशे बलवत्ययत्नधनसम्प्राप्तिं बलोनेऽंशपे
स्वल्प प्रोक्तफलं भवेदुदयतः कर्मर्क्षदेशे फलम्।
अंशस्योक्तदिशं वदेत्पतियुते दृष्टे स्वदेशे फलं
सत्यन्यैः परदेशजं तदधिपस्यांशे स्वदेशे स्थिरे।।[18]

इससे यह संकेत भी प्राप्त होता है कि नवांश राशि यदि चर हो तो विदेश में, द्विस्वभाव हो तो देश तथा विदेश दोनों ओर से आजीविका का सम्बन्ध हो सकता है।
यह भी एक विचारणीय तथ्य है कि दशमेश अथवा दशमेश का नवांशेश यदि मित्र गृह में हो तो मित्रों द्वारा, शत्रु गृह में हो तो शत्रुओं द्वारा तथा स्वगृही हो तो अपने ही बन्धुओं या परिवारीजनों के प्रयत्नों द्वारा आजीविका में लाभ होता है। यदि सूर्य उच्च या बलवान् हो तो मनुष्य अपने ही परिश्रम से अर्थ प्राप्ति करता है। यथा–

मित्रारिस्वगहगृतैस्ततस्ततोऽर्थास्तुङ्गस्थेबलिनि च भास्करे स्ववीर्यात्।
आयस्थैरुदयधनाश्रितैश्च सौम्यैः संचिन्त्यं बलसहितैरनेकधा स्वम्।।[19]

अन्यत्र–

मित्रारिगेहोपगतैर्नभोगैस्ततस्तदर्थः परिकल्पनीयः।
तुङ्गे पतङ्गे स्वगृहे त्रिकोणे स्यादर्थसिद्धिर्निजबाहुवीर्यात्।।[20]

धनलाभ की स्थितियों का विवेचन करने के सन्दर्भ में सारावली का अग्रांकित श्लोक भी दृष्टव्य है–

होरागतैर्धनगतैरायगृहस्थैश्च चिन्तयेदर्थम्।
बलसंयुतग्रहेन्द्रैरनेकधाऽऽदिष्टमाचार्यैः।।[21]

अर्थात्– 1, 2, 11 भावों में स्थित ग्रहों से या बलवान् ग्रहों से धनलाभ का विचार किया जाता है। इन भावों में यदि शुभ ग्रह हों तो सरलतापूर्वक धन लाभ होता है, पापग्रह हों तो परिश्रमपूर्वक धनलाभ होता है।

निष्कर्ष

अतएव स्पष्ट है कि यदि कोई भी व्यक्ति अपनी जीविका के लिए जन्म पत्रिका में निर्मित होने वाले योगों के अनुरूप कार्यक्षेत्र का चयन करे तो उसे अभीष्ट सफलता प्राप्त हो सकती है।
इस हेतु जन्मांग का विश्लेषण करते समय दशम भाव में स्थित राशि व ग्रह, यह भाव किन ग्रहों से दृष्ट है तथा दशमेश की नवांश राशि का स्वामी ग्रह, नवांश राशि किन ग्रहों से युत व दृष्ट है, इन सभी बिन्दुओं का विशेष रूप से विचार किया जाना चाहिए। तत्पश्चात् इन ग्रह योगों द्वारा निर्दिष्ट क्षेत्रों में ही धनोपार्जन का प्रयास करना चाहिए।

संदर्भ सूची

1. बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्/कर्मभावफलाध्यायः/श्लोक 1/प्रकाशक–चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी/प्रकाशन वर्ष– 2009ई0
2. सर्वार्थ चिन्तामणि (प्रथम खण्ड)/दशमादिभावाध्यायः/श्लोक 2, 3/प्रकाशक–रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली/प्रकाशन वर्ष– 2010ई0
3. जातक पारिजात (द्वितीय खण्ड)/अध्याय 15/श्लोक 1 पूर्वार्ध भाग/प्रकाशक–रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली/प्रकाशन वर्ष– 2000ई0
4. जातक सारदीप (भाग–2)/दशमभावाध्यायः/श्लोक 4/प्रकाशक–रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली/प्रकाशन वर्ष– 2009ई0
5. बृहज्जातकम्/कर्माजीवाध्यायः/श्लोक 1/प्रकाशक–रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली/प्रकाशन वर्ष–2008ई0
6. फलदीपिका/कर्माजीवाध्यायः/श्लोक 1 परार्ध भाग/प्रकाशक– रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली/प्रकाशन वर्ष– 2006ई0
7. फलदीपिका/कर्माजीवाध्यायः/श्लोक 2/प्रकाशक– रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली/प्रकाशन वर्ष– 2006ई0
8. फलदीपिका/कर्माजीवाध्यायः/श्लोक 3/प्रकाशक– रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली/प्रकाशन वर्ष– 2006ई0
9. फलदीपिका/कर्माजीवाध्यायः/श्लोक 4/प्रकाशक– रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली/प्रकाशन वर्ष– 2006ई0
10. फलदीपिका/कर्माजीवाध्यायः/श्लोक 5/प्रकाशक– रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली/प्रकाशन वर्ष– 2006ई0
11. फलदीपिका/कर्माजीवाध्यायः/श्लोक 6/प्रकाशक– रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली/प्रकाशन वर्ष– 2006ई0
12. फलदीपिका/कर्माजीवाध्यायः/श्लोक 7/प्रकाशक– रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली/प्रकाशन वर्ष– 2006ई0
13. फलदीपिका/कर्माजीवाध्यायः/श्लोक 8/प्रकाशक– रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली/प्रकाशन वर्ष– 2006ई0
14. बृहज्जातकम्/कर्माजीवाध्यायः/श्लोक 2, 3/प्रकाशक– रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली/प्रकाशन वर्ष– 2008ई0
15. जातक सारदीप (भाग–2)/दशमभावाध्यायः/श्लोक 2/प्रकाशक– रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली/प्रकाशन वर्ष– 2009ई0
16. फलित मार्तण्ड/कर्माजीवाध्यायः/श्लोक 9/मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली/प्रकाशन वर्ष– 2013ई0
17. सारावली/कर्मचिन्ताध्यायः/श्लोक 3, 4, 5/प्रकाशक– रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली/प्रकाशन वर्ष– 2008ई0
18. फलदीपिका/कर्माजीवाध्यायः/श्लोक 9/प्रकाशक– रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली/प्रकाशन वर्ष– 2006ई0
19. बृहज्जातकम्/कर्माजीवाध्यायः/श्लोक 4/प्रकाशक– रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली/प्रकाशन वर्ष– 2008ई0
20. जातकाभरणम्/दशमभावविचारः/श्लोक 16/प्रकाशक– ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार, वाराणसी/प्रकाशन वर्ष– 2003ई0
21. सारावली/अध्याय 33/श्लोक 82/प्रकाशक– रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली/प्रकाशन वर्ष– 2008ई0